"काव्यलक्षण"

★ **काव्यलक्षण :→** इसका अर्थ है - परिभाषा ।
इससे तात्पर्य है, कविता की परिभाषा, लक्षण एक पारिभाषिक शब्द है। "लक्षण संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ है— "जो "अव्याप्ति" (संक्षिप्त या कम), अतिव्याप्ति और असंभव दोषों से मुक्त हो"। सरलभाषा में इसे पूर्ण एवं दोषरहित परिभाषा कहा जा सकता है। सांसारिक दिखाई देनेवाली वस्तु की भी पूर्ण और दोष-रहित परिभाषा करना तो कठिन है। फिर काव्य जैसे मानसिक धरातल की वस्तु की दोषरहित परिभाषा करना तो बिल्कुल कठिन कार्य है। यही कारण है, कि प्रत्येक भाषा के विद्वानों ने इस कठिन कार्य के लिए प्रयास किया। लेकिन आजतक काव्य की पूर्ण दोषरहित तथा सर्वमान्य परिभाषा नहीं बन सकती।

★ **लक्षण की विशेषताएँ :→**
(i) संक्षिप्त हो
(ii) सुबोध हो
(iii) पारिभाषिक शब्दावली से रहित हो
(iv) व्याख्या की अपेक्षा न रखती हो।

★ **भामह के अनुसार काव्यलक्षण :→**

"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्"। अर्थात शब्द और अर्थ का सहित भाव को ही काव्य कहा जाता है।

इस परिभाषा का दोष :→ इस परिभाषा का सबसे बड़ा दोष यह है कि - भामह का यह लक्षण अतिव्याप्ति दोष से दूषित है। क्योंकि शब्दार्थ का सहभाव तो शास्त्र में भी पाया जाता है। ये शास्त्र (दर्शनशास्त्र व्याकरण शास्त्र आदि) काव्य नहीं कही जा सकती। अत यह परिभाषा स्पष्ट नहीं है।

★ **दण्डी के अनुसार काव्यलक्षण :→**

दण्डी का समय है सातवी शताब्दी। आप अलंकारवादी हैं। आपका काव्य है - "काव्यादर्श"। दण्डी ने काव्य की परिभाषा इस प्रकार से दी है— "इष्ट अर्थ से परिपूर्ण पदावली काव्य का शरीर है"।

"शरीरम्, तावद् इष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली"। दण्डि अलंकार को काव्य का शोभाकारक धर्म मानते थे। अतः इष्ट अर्थ से उनका अभिप्राय अलंकार से प्राप्त आनन्द माना जा सकता है। दण्डि का लक्षण काव्य के शरीर की परिभाषा प्रस्तुत करता है, न कि काव्य की। फिर भी यदि इसे काव्य का लक्षण मान लिया जाय, तो इसमें अनेक दोष पाया जाता है। जैसे:

(i) काव्य का शरीर पदावली नहीं है, क्योंकि शब्द और अर्थ दोनों का समन्वित रूप है।

(ii) इष्टार्थ शब्द व्याख्या का अपेक्षा रखता है। (इष्टार्थ — अलंकारों के प्रयोग से जो आनन्द मिलते है, वही इष्टार्थ)

★ ~~[illegible]~~

★ **मम्मट :→** मम्मट समन्वयवादी आचार्य है। इनका समय था लगभग ग्यारहवी शताब्दी। इनका ग्रंथ है— "काव्य-प्रकाश" मम्मट के अनुसार काव्यलक्षण है— 'तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावलंकृति पुनः क्वापि"। अर्थात 'शब्द और अर्थ दोनों की सामहि (मेल) ही काव्य है"। इस "शब्दार्थ" में तीन विशेषताएँ होनी चाहिए। जैसे :— "शब्दार्थ दोषों से रहित होना चाहिए, शब्दार्थ गुणों (ओज, माधुर्य, प्रसाद) से सम्पन्न होना चाहिए। काव्य अलंकृत ही होता ~~चाहिए~~ है। किन्तु जहाँ रस की प्रतीति हो रही हो वहाँ अलंकार रहित भी हो सकता है। मम्मट अलंकारों को विकल्प के रूप में रखते है।

तीन विद्वानों ने इसमें आपत्ति की है— विश्वनाथ, पण्डितराज जगन्नाथ और जयदेव।

(i) **विश्वनाथ :→** विश्वनाथ ने "अदोषौ" की आलोचना करते हुए कहा है कि, यदि दोषरहित शब्द और अर्थ को ही काव्य माना जाय, तो, बिना दोषों के काव्य संसार में मिलना दुर्लभ हो जायेगा। विश्वनाथ ने लक्षण में प्रयुक्त "सगुणौ" विशेषण का भी खण्डन करते हुए कहा है कि गुण रस के धर्म है, शब्दार्थ के नहीं। वे रस में रहते हैं, शब्द अर्थ में नहीं। ऐसी दशा में यह विशेषण उचित नहीं है।

☆पण्डितराज जगन्नाथ :-> आप समन्वयवादी आचार्य हैं। इनका समय है सत्रहवीं शती। आपके ग्रंथ का नाम है- रसगंगाधर। आप संस्कृत काव्यशास्त्र के अन्तिम आचार्य थे। आपने "शब्दार्थौ" विशेष्य की आलोचना की है। उनका मत है, कि काव्यत्व शब्द और अर्थ दोनों में रहनेवाला धर्म नहीं है, बल्कि वह केवल शब्द में रहनेवाला धर्म अर्थात गुण है। इसप्रकार मम्मट की "शब्दार्थौ" संज्ञा उचित नहीं है। पण्डितराज जगन्नाथ की आलोचना अत्यन्त गंभीर और सहानुभूतिपूर्ण है।

☆जयदेव :-> आप अलंकारवादी आचार्य हैं। इनका समय तेरहवीं शती माना जाता है। आपका ग्रंथ है-"चन्द्रालोक"। जयदेव ने "अनलंकृति पुनः क्वापि" की आलोचना करते हुए लिखा है कि, काव्य अलंकारों से युक्त ही होता है। उसे अलंकार रहित मानने का प्रश्न ही नहीं उठता। उनका मत है कि, जो काव्य को अलंकारों से रहित मानते हैं, वे अग्नि को उष्णताहीन क्यों नहीं मान लेते।

मम्मट के काव्यलक्षण की आलोचना भले ही की गयी हो, किन्तु उनका काव्यलक्षण अत्यधिक परिमार्जित है। उन्होंने निर्दोषता तथा गुणवत्ता को महत्व देकर नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। वे शब्दार्थ के सद्भाव से काफी आगे बढ़े हैं।

☆विश्वनाथ :-> यह रसवादी आचार्य है। इनका समय लगभग चौदहवीं शताब्दी माना जाता है। इनका ग्रंथ है-"साहित्यदर्पण"। विश्वनाथ द्वारा प्रस्तुत काव्यलक्षण है-"वाक्यं रसात्मकं काव्यम्"। अर्थात रस से युक्त वाक्य ही काव्य है। आचार्य विश्वनाथ का यह काव्यलक्षण में निम्नलिखित दोष पाये जाते हैं :-

(i) विश्वनाथ का यह काव्यलक्षण अव्याप्ति दोष से दूषित है।

(ii) इसमें रसशब्द व्याख्या की अपेक्षा रखता है।

(iii) रस से युक्त वाक्य (पदसमूह) को काव्य कहना उचित नहीं है। क्योंकि रसात्मकता की स्थिति वाक्य में नहीं होती, बल्कि शब्द और अर्थ के समन्वित रूप में ही हो सकता है।

Date 14
Page 22/1/17

अर्थ :→ यह सिर्फ रस की ही व्याख्या करती है, अर्थ की नहीं। इसलिए इसमें अव्याप्ति दोष है।

★ **पंडितराज जगन्नाथ :→** इनका समय लगभग सत्रहवी शताब्दी माना जाता है। इनका ग्रंथ है- "रसगंगाधर", ये संस्कृत काव्यशास्त्र के अंतिम आचार्य हैं। इनका सूत्र है- "रमणीयार्थ प्रतिपादक: शब्द: काव्यम्"। अर्थात रमणीय अर्थ का प्रतिपादक (बतानेवाला) शब्द को ही काव्य कहते हैं।

समीक्षा :→ (i) इस काव्य में सबसे बड़ा दोष यह है, कि रमणीयता (आनन्द, रस, चमत्कार) का प्रतिपादक केवल शब्द नहीं हो सकता। बल्कि शब्द और अर्थ का समन्वित रूप ही काव्य हो सकता है।

(ii) रमणीय शब्द न केवल रस का वाचक है, बल्कि काव्य के किसी भी तत्व (ध्वनि, रीति, अलंकार, वक्रोक्ति, औचित्य) से प्राप्त आनन्द का वाचक है।

(iii) रमणीय शब्द अत्यधिक व्यापक है।

(iv) रमणीय शब्द पारिभाषिक नहीं है और न ही वह व्याख्या की अपेक्षा रखता है।

"हिन्दी के आचार्य"

हिन्दी के विचारकों का मत है कि हिन्दी में काव्यशास्त्रीय चिंतन का प्रारम्भ रीतिकाल से हुआ है। रीतिकाल का समय संवत् 1700-1900 तक माना जाता है। रीतिग्रंथों में काव्य के स्वरूप पर बहुत प्रकाश डाला गया है। किंतु इनमें मौलिकता नहीं है। संस्कृत ग्रंथों के लक्षणों को ही ब्रजभाषा में शब्दबद्ध कर दिया गया है। इस काल के विशेष उपजीव्य (प्रेरणा ग्रहण करनेवाले) रहे हैं - मम्मट।

चिन्तामणि :→ चिन्तामणि का काव्यलक्षण है:-

"सगुन अलंकारन सहित दोष रहित जो होई।
शब्द - अर्थ वीरो कवित्त, बिबुध कहत सब कोई" ॥

अर्थात गुण और अलंकार सहित और दोषरहित शब्द और अर्थ का मेल ही काव्य है

मम्मट और आचार्य चिन्तामणि के काव्यलक्षण में यदि अन्तर है, तो वह यह है कि चिन्तामणि के काव्यलक्षण में अलंकारों की स्थिति अनिवार्य है। मम्मट के काव्यलक्षण में अलंकारों की स्थिति विकल्प के रूप में है।

आधुनिक युग के विचारकों में- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और डॉ नगेन्द्र के काव्य उल्लेखनीय है।

(i) महावीर प्रसाद द्विवेदी:- यदि कविता में अलंकार नहीं कोई विलक्षणता नहीं, तो उससे आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती। द्विवेदीजी का यह कथन कविता का या काव्य का लक्षण न होकर उसकी विशेषताओं की ओर संकेत करता है।

(ii) रामचन्द्र शुक्ल:- शुक्लजी रसवादी आचार्य हैं। वे काव्य में भाव सम्पदा पर विशेष बल देते हैं। इनका काव्यलक्षण है- "जिसप्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसीप्रकार हृदय की मुक्तावस्था को रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी, जो शब्द विधान करती है, उसे कविता कहते हैं,

समीक्षा:- आचार्य शुक्ल के काव्यलक्षण में "हृदय की मुक्तावस्था" तथा "रस दशा" पारिभाषिक शब्द है। ये पारिभाषिक शब्द व्याख्या की अपेक्षा रखती है।

डॉ. नगेन्द्र:- आप रसवादी आलोचक है। आपके काव्य लक्षण है - "रमणीय अनुभूति, उक्ति वैचित्र्य और छन्द- इन तीनों का समन्वित रूप ही कविता है"। आपने सुन्दर अनुभूति, चमत्कार और छन्द के मेल को ही कविता की संज्ञा दी है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि, उपरोक्त सभी काव्यलक्षण अपूर्ण है। हमारे विचार में निम्नलिखित को उपयुक्त काव्य लक्षण माना जा सकता है-

"रमणीयता प्रतिपादको शब्दार्थौ काव्यम"।

अर्थात रमणीयता का प्रतिपादक

शब्द और अर्थ का सम्मिलित स्वरूप काव्य कहलाता है।

— o —